

# डॉ. डेव मैथ्यूसन, रहस्योद्घाटन, व्याख्यान 27, रहस्योद्घाटन 20, सहस्राब्दी और महान श्वेत सिंहासन निर्णय

© 2024 डेव मैथ्यूसन और टेड हिल्डेब्रांट

यह रहस्योद्घाटन की पुस्तक पर अपने पाठ्यक्रम में डॉ. डेव मैथ्यूसन हैं। यह प्रकाशितवाक्य 20, सहस्राब्दी और महान श्वेत सिंहासन न्याय पर सत्र 27 है।

इसलिए, मिलेनियम के मुद्दे की ओर मुड़ने के लिए, मैंने कई सिद्धांतों पर संक्षेप में चर्चा की है जो मुझे लगता है कि महत्वपूर्ण हैं जो लागू होने चाहिए, या मुझे लगता है कि जब हम मिलेनियम की व्याख्या करते हैं तो उन्हें लागू होना चाहिए।

एक अन्य सिद्धांत यह है कि हमें अभी भी चर्च के इतिहास पर नज़र रखने की ज़रूरत है और इसने हमें क्या सिखाया है, यह पाठ के साथ कैसे जुड़ता है, और उस पहलू से क्या महत्वपूर्ण और मूल्यवान रहा है। लेकिन मैंने शीघ्रता से संक्षेप में बताने के लिए चार चीजों पर प्रकाश डाला।

नंबर एक, हज़ार साल, चाहे हम अस्थायी रूप से इसका संदर्भ लें, उसे प्रतीकात्मक रूप से लिया जाना चाहिए।

यानी, यह वस्तुतः किसी भी लंबाई की अवधि को संदर्भित कर सकता है, लेकिन 1000, अन्य सभी संख्याओं की तरह, प्रतीकात्मक है।

मुझे लगता है कि यह दूसरा अध्याय 20, जैसा कि हम इसे समझते हैं, संदर्भित करता है, 19 से 21 के संदर्भ में मसीह के दूसरे आगमन पर होने वाली किसी चीज़ को संदर्भित करता है। मुझे लगता है, अध्याय 20, अभी भी संदर्भित करता है कि दूसरे आगमन पर क्या होता है इतिहास के अंत में ईसा मसीह का।

तीसरा, हमने कहा कि हमें इसे आवश्यक रूप से सख्त कालानुक्रमिक क्रम में नहीं लेना चाहिए। और फिर अंत में, मुझे लगता है कि हमारी व्याख्या को उस भूमिका को प्रतिबिंबित करने की आवश्यकता है जो अध्याय 20 रहस्योद्घाटन के भीतर निभाता है, कि यह सबसे महत्वपूर्ण विशेषता नहीं है। यह रहस्योद्घाटन का प्राथमिक लक्ष्य और बिंदु नहीं है, नई रचना है।

इतना कहने के बाद, मुझे इस बारे में थोड़ी बात करनी चाहिए कि मैंने प्रकाशितवाक्य अध्याय 20 और विशेष रूप से छंद 4 से 6 और सहस्राब्दी के संदर्भ को कैसे पढ़ा। मेरी राय में, प्रकाशितवाक्य 20 में सहस्राब्दी संदर्भ को मुख्य रूप से संतों की पुष्टि के प्रतीक के रूप में लिया जाना चाहिए। अर्थात्, हम पहले ही नोट कर चुके हैं कि अध्याय 20 का अर्थ श्लोक 4 के अंत में जीवन में आने और मसीह के साथ शासन करने का संदर्भ है।

रहस्योद्घाटन में इसका प्राथमिक कार्य शैतान और जानवरों के करियर के उलट और विपरीत के रूप में देखा जाना है। शैतान और दो जानवरों को चित्रित किया गया है, और विशेष रूप से

अब शैतान को, इन सबके पीछे के अगुआ के रूप में। शैतान को शासन करने वाले और शासन करने वाले के रूप में चित्रित किया गया है।

पृथ्वी उसका राज्य और उसका शासन है, जिसे अब पहली शताब्दी में जॉन के लिए रोमन साम्राज्य के माध्यम से व्यक्त किया गया है, उसका शासन हर चीज़ पर हावी है। और उसके परिणामस्वरूप, उसने ईसाइयों को मौत के घाट उतार दिया। इसलिए ईसाइयों पर उसका फैसला उनसे छुटकारा पाने और उन्हें मारने का है क्योंकि वे उसके राज्य का विरोध करते हैं और उसके साथ सहयोग करने से इनकार करते हैं।

इसलिए, वह उन्हें मौत के घाट उतार देता है। अब, पूरी तरह उलटफेर की स्थिति में, फैसला यह है कि जानवर के शासनकाल के दौरान जो सच था, उसके ठीक विपरीत, अब संत जीवित हो गए हैं। जिन संतों को मौत की सजा दी गई थी, वे जीवित हो गए।

शैतान, जिसने शासन किया, के विपरीत, संत शासन करते हैं। इसलिए मैं यह मानता हूँ कि तब के हजार वर्षों को मुख्य रूप से इस घटना के प्रतीक के रूप में देखा जाना चाहिए। संतों का उत्थान और जीवन में आना और उनकी पुष्टि के रूप में शासन करना।

इसलिए, मैं यह मानता हूँ कि हजार वर्ष वास्तव में पर्याप्त लंबाई की किसी विशिष्ट अवधि को संदर्भित नहीं करता है। यह बस एक और तरीका है, मसीह के वापस आने पर क्या होता है इसका उल्लेख करने का एक प्रतीकात्मक तरीका। संतों को उठाया जाएगा और न्यायोचित ठहराया जाएगा, और वे राज्य करेंगे; वे जीवित हो उठेंगे और राज्य करेंगे, जो उस जानवर के हाथों उनके साथ किए गए व्यवहार के बिल्कुल विपरीत होगा, जिसने शासन किया था।

और वह घटना हजार वर्ष की अवधि का प्रतीक है। इसलिए मुझे नहीं लगता कि यह आवश्यक रूप से समय की किसी शाब्दिक अवधि को संदर्भित करता है, जहां तक ईसा मसीह के वापस आने के बाद लंबे समय तक चलने की बात है, लेकिन यह वर्णन करने का एक और तरीका हो सकता है कि ईसा मसीह के दूसरे आगमन पर क्या होता है। वह संतों को ऊपर उठाता है, और वे शैतान के न्याय के संदर्भ में उनके समर्थन के रूप में शासन करते हैं।

अब वे शासन करते हैं, और यह एक हजार वर्षों का प्रतीक है, या हजार वर्ष केवल हजार को पूर्णता और परिपूर्णता की संख्या का प्रतीक है। अब हम इस हजार वर्षों के प्रतीक संतों का पूर्ण समर्थन देखते हैं। हजार वर्षों की संख्या को संभवतः अन्य समय के संदर्भों के प्रकाश में भी पढ़ा जाना चाहिए जो संतों के शासनकाल का उल्लेख करते हैं।

दूसरे शब्दों में, हम पूछ सकते हैं कि उन्होंने एक हजार वर्ष का उपयोग क्यों किया? संभवतः शैतान के शासनकाल और उसकी उत्पीड़क हिंसक गतिविधियों और संतों को मौत के घाट उतारने के प्रतीक के रूप में इस्तेमाल की जाने वाली समय अवधि के विपरीत चित्रण करने के लिए। इसलिए, उदाहरण के लिए, प्रकाशितवाक्य में कहीं और, हमने अध्याय दो और तीन में देखा, हमने पीड़ा की अवधि को दस दिनों के रूप में संदर्भित किया, समय की एक प्रतीकात्मक अवधि जो संभवतः डैनियल से ली गई थी। हमने ड्रेगन की गतिविधि की अवधि को साढ़े तीन साल या समय समय और आधा समय के रूप में भी देखा।

हमने इसे 42 महीने और 1260 दिन के रूप में देखा। अब, इसके विपरीत, संत एक हजार वर्षों तक शासन करते हैं। तो मुद्दा यह है कि समय की सीमित अवधि, चाहे वह कितनी भी गहन क्यों न हो, शैतान के शासन करने की सीमित अवधि और संतों के शासन करने की अवधि, एक हजार साल के बीच एक अंतर निकालना है।

लेकिन फिर, मुद्दा समय की शाब्दिक अवधि को चित्रित करने का नहीं है, या मैं वास्तव में संतों के शासनकाल की कुछ फैली हुई अवधि के संदर्भ में समय की अवधि का सुझाव नहीं दे रहा हूँ, बल्कि केवल संख्याओं के मूल्य का सुझाव दे रहा हूँ। एक हजार साल को साढ़े तीन साल, 42 महीने, 1260 दिनों के बिल्कुल विपरीत देखा जाना चाहिए, जब शैतान और जानवर को भगवान के लोगों पर कहर बरपाने की अनुमति दी गई थी। तो एक बार फिर, संख्याओं का मुद्दा भगवान के लोगों का पूर्ण, पूर्ण समर्थन है जो दर्शाता है कि महत्वहीन या छोटी संख्याओं का उपयोग करके, यह दर्शाता है कि शैतान का शासन और उसकी उत्पीड़नकारी गतिविधि अब तुलनात्मक रूप से महत्वहीन दिखाई देती है।

संत अब पूरी तरह से सही साबित हो चुके हैं और यह सब हजार साल के शासनकाल का प्रतीक है। इसलिए अब संतों को उनके कष्टों के लिए इस तरह से मुआवजा दिया गया है जो कि जानवर के हाथों उनके द्वारा सहे गए कष्टों से कहीं अधिक है, जो कि केवल 10 दिन, साढ़े तीन साल का था। अब, उनका मुआवज़ा, जो 1000 वर्षों का प्रतीक है, जानवर के हाथों उन्हें जो कुछ सहना पड़ा, उससे कहीं अधिक है।

संभवतः कम से कम मेरे विचार में, हमें सहस्राब्दी में इससे अधिक कुछ नहीं पढ़ना चाहिए और हमें इसमें कुछ और पढ़ने के बारे में सावधान रहना चाहिए। प्रकाशितवाक्य 20 और शेष प्रकाशितवाक्य में मैं यही एकमात्र भूमिका देखता हूँ, एकमात्र भूमिका जो यह निभाता है, या कम से कम प्राथमिक भूमिका जो हजार साल का शासन निभाता है वह संतों की जीत और पुष्टि का प्रतीक है। और यहां हमने पहले से ही एक तरह से संतों की पुष्टि का संदर्भ देखा है।

हमने उन्हें अध्याय 15 में समुद्र के किनारे विजयी रूप से खड़े देखा है। हमने उन्हें अध्याय 14 में सियोन पर्वत के सामने खड़े देखा है। लेकिन अब, लेखक संतों की पुष्टि को एक अलग रोशनी में चित्रित करना चाहता है।

वह संतों की पुष्टि को अधिक विशिष्ट रूप से चित्रित करना चाहता है, इसके विपरीत कि शैतान के हाथों उनके साथ कैसा व्यवहार किया गया था और अब वे शैतान के शासन के बजाय शासन कर रहे हैं और उन्हें जीवन में डाल रहे हैं। अब, उस समय की अवधि के साथ तुलना करके जिस पर शैतान ने शासन किया था, प्रतीकात्मक रूप से 1000 वर्ष उनके स्वयं के शासनकाल को संदर्भित करता है। तो, इसे परिप्रेक्ष्य में वापस लाने के लिए, आपके पास अध्याय 20 में वह दृश्य है जहां मैंने कहा था, मुझे अभी भी लगता है कि अध्याय 20 का प्राथमिक कार्य शैतान पर निर्णय है।

और इसे शैतान पर अंतिम फैसले और निर्णय के रूप में देखा जाना चाहिए। यह भी दिलचस्प है कि हमें यह विचार लाने की भी आवश्यकता हो सकती है कि प्रकाशितवाक्य में कहीं और, विशेष रूप से अध्याय 12 में, शैतान को संत के रूप में भगवान के लोगों के भाइयों पर आरोप लगाने वाले के रूप में देखा गया था। तो अब हम पाते हैं कि शैतान स्वयं एक अर्थ में अपने किए का हिसाब दे रहा है, और अब शैतान का न्याय किया जाता है।

लेकिन शैतान के न्याय का एक हिस्सा उन लोगों को दोषमुक्त करना भी है जिन पर उसने आरोप लगाया है और जिन्हें उसने नुकसान पहुंचाया है और सताया है। इसलिए मुझे लगता है कि आपके पास श्लोक चार से छह तक हैं, यह शैतान के फैसले के संदर्भ में संतों की पुष्टि का संदर्भ है, क्योंकि उसका फैसला, शैतान के फैसले का प्रतिपादन है, कि वह संतों के खून का दोषी है। जिस तरह से उसने उनके साथ व्यवहार किया, उसके लिए वह दोषी है।'

उनके फैसले का एक हिस्सा यह भी है कि जिन लोगों के साथ उन्होंने दुर्व्यवहार किया है और उन्हें नुकसान पहुंचाया है और उन्हें मौत की सजा दी है, उन्हें सही ठहराया जाएगा और दिखाया जाएगा कि उनकी गवाही वैध थी, कि वे सही थे, और उनकी मृत्यु व्यर्थ नहीं थी। श्लोक पाँच फिर श्लोक छह तक जारी रहता है; पद पाँच शेष मृतकों को संदर्भित करता है जो 1,000 वर्षों के अंत में पुनर्जीवित हो जाते हैं। सवाल ये है कि ये कौन से मुर्दे हैं जो 1000 साल बाद ज़िंदा हो गए? और क्या यह एक और पुनरुत्थान है? दूसरे शब्दों में, यह दूसरा पुनरुत्थान प्रतीत होता है।

तो, पहला पुनरुत्थान बिल्कुल वैसा ही है जैसा यूहन्ना इसे पद चार में कहता है। श्लोक चार संतों के पुनरुत्थान का संदर्भ है। और अब श्लोक पाँच एक और पुनरुत्थान, एक और पुनरुत्थान की आशा करता प्रतीत होता है।

हम इसे एक क्षण में एक साथ रख देंगे, लेकिन इसे केवल अपने दिमाग में रखें। तो, श्लोक छह तो, श्लोक छह कहता है, वास्तव में, श्लोक पाँच, शेष मृतक तब तक जीवित नहीं हुए जब तक कि 1,000 वर्ष समाप्त नहीं हो गए, जो कि जीवन में आने का संदर्भ प्रतीत होता है, एक और पुनरुत्थान की आशा करता प्रतीत होता है। हम पहले ही पद चार में पुनरुत्थान पा चुके हैं, संत जीवन में आ रहे हैं।

अब, पद पाँच मृतकों के शेष रहने का सुझाव देता प्रतीत होता है; 1,000 वर्षों के बाद और भी बहुत कुछ उठाया जाना बाकी है। अब, श्लोक पाँच का दूसरा भाग, श्लोक पाँच का अंतिम भाग कहता है, यह पहला पुनरुत्थान है। क्या? श्लोक चार में, संतों का जीवन में आना पहला पुनरुत्थान है।

लेकिन फिर ध्यान दें श्लोक छह में कहा गया है, धन्य और पवित्र वे हैं जिन्होंने पहले पुनरुत्थान में भाग लिया है। वह श्लोक चार है, संत जीवन में आ रहे हैं। धन्य हैं वे जो पहले पुनरुत्थान में भाग लेते हैं।

दूसरी मृत्यु का उन पर कोई अधिकार नहीं है। तो, दिलचस्प बात यह है कि, आपके पास पहले पुनरुत्थान का संदर्भ है, यानी, श्लोक चार, संत जीवन में आ रहे हैं और शासन कर रहे हैं, और

आपके पास दूसरी मृत्यु का संदर्भ है, जिसे बाद में हम देखेंगे; जॉन हमें ठीक-ठीक बताएगा कि दूसरी मृत्यु क्या है। तो, आपके पास पहला पुनरुत्थान और दूसरी मृत्यु है।

इसका तात्पर्य दूसरा पुनरुत्थान और पहली मृत्यु है। क्या हर कोई उसका पालन करता है? पहला पुनरुत्थान श्लोक चार में है, और अब, श्लोक छह में, जॉन दूसरी मृत्यु की अपील करता है। पहला पुनरुत्थान यह सुझाव देता प्रतीत होता है कि कहीं न कहीं दूसरा पुनरुत्थान भी है।

अन्यथा, पहले दो बार क्यों कहें? और फिर दूसरी मृत्यु का उल्लेख यह मान लेता है कि पहली मृत्यु हुई है। लेकिन जॉन हमें यह नहीं बताता कि क्या; वह पहली मौत के बारे में बात नहीं करता। वह इसका उल्लेख नहीं करता है और बताता है कि यह क्या है और पहली मृत्यु शब्दों का उपयोग करता है।

और वह दूसरा पुनरुत्थान शब्द का भी प्रयोग नहीं करता है। वे दो तत्व गायब प्रतीत होते हैं। तो, आपके पास पहला पुनरुत्थान और दूसरी मृत्यु है।

पहले के बाद दूसरा पुनरुत्थान कहाँ आता है? और पहली मौत कहाँ है? इनमें से किसी का भी जॉन स्पष्ट रूप से उल्लेख नहीं करता है। संभवतः जिस तरह से हमें इसे समझना चाहिए वह यही है। पहला पुनरुत्थान श्लोक चार में स्पष्ट रूप से है, संतों का पुनरुत्थान जो हजारों वर्षों का प्रतीक है।

दूसरा पुनरुत्थान कहाँ है? संभवतः, यह श्लोक पाँच है, श्लोक पाँच का पहला भाग। जब तक हज़ार वर्ष पूरे नहीं हुए तब तक शेष मृतक जीवित नहीं हुए। हम उसे कहां देखते हैं? श्लोक 11 से 15.

मुझे लगता है कि श्लोक 11 और 15 दूसरा पुनरुत्थान हैं, जहां अब सभी मृत हैं, और विशेष रूप से श्लोक 12 में ध्यान दें, मैंने मृतकों को, बड़े और छोटे, सिंहासन के सामने खड़े देखा और किताबें खोली गईं। एक और पुस्तक खोली गई, जो जीवन की पुस्तक है। जो कुछ किया गया था उसके अनुसार मृतकों का न्याय किया गया।

फिर, श्लोक 13 में, समुद्र ने अपने मृतकों को त्याग दिया, और मृत्यु और अधोलोक ने भी अपने मृतकों को त्याग दिया। मुझे लगता है कि यह दूसरा पुनरुत्थान है। हालाँकि जॉन इसे इस तरह से लेबल नहीं करता है, मुझे लगता है कि यह निहित है।

पद पाँच में, शेष मृतक पहले पुनरुत्थान के बाद, हज़ार वर्षों के बाद तक जीवित नहीं हुए। जीवन में आने का वह संदर्भ आपका दूसरा पुनरुत्थान होगा। फिर मुझे लगता है कि श्लोक 11 से 15 इसका वर्णन करते हैं, दूसरा पुनरुत्थान।

पहला पुनरुत्थान है, श्लोक चार, संत जीवन में आ रहे हैं और शासन कर रहे हैं, जो एक हजार वर्षों का प्रतीक है। फिर, दूसरा पुनरुत्थान श्लोक 11 से 15 तक है, जहां न्याय के अंतिम कार्य में सभी मृतकों को पुनर्जीवित किया जाता है। अब, हमने यह भी कहा कि जॉन दूसरी मृत्यु का उल्लेख करता है।

दूसरी मौत क्या है? दरअसल, हम अध्याय 20 के छंद 14 और 15 में स्पष्ट रूप से पहचानी गई दूसरी मृत्यु पाते हैं। इस महान सफेद सिंहासन न्याय आसन पर, जब उन्हें उठाया जाता है और उनका न्याय किया जाता है, श्लोक 14, तब मृत्यु और अधोलोक को आग की झील में फेंक दिया गया था। आग की झील दूसरी मौत है।

तो, अंतिम न्याय आग की झील में डाला जा रहा है, जहां जानवर को पहले ही अध्याय 19 में फेंक दिया गया है, और जहां अजगर को फेंक दिया गया है, और हम देखेंगे कि उसे अध्याय 20 में फेंक दिया गया है, आग की झील, और हम एक क्षण में देखेंगे कि वह क्या है। वह दूसरी मृत्यु है, और ईसाई उस दूसरी मृत्यु से बच गये हैं। जॉन कहते हैं, धन्य हैं वे जो पहले पुनरुत्थान में भाग लेते हैं, जो मसीह के प्रति वफादार हैं, और जो जानवर के सामने झुकने से इनकार करते हैं।

वे जीवन के पहले पुनरुत्थान का अनुभव करेंगे, और जॉन कहते हैं कि उन्हें उस दूसरी मौत के बारे में चिंता करने की ज़रूरत नहीं है, जिसे आग की झील में फेंक दिया जा रहा है। यह उन लोगों के लिए है जो दूसरे पुनरुत्थान में भाग लेते हैं। लेकिन पहली मौत कहां है? यह दूसरी मृत्यु है, जो आग की झील में फेंकी जा रही है।

क्या कोई पहली मौत होती है? मुझे लगता है कि जॉन का मानना है कि पहली मौत शारीरिक मृत्यु है, सिर काटना और हत्या और हत्या करना जिसे ईसाइयों ने अपने वफादार साक्ष्य के हिस्से के रूप में अनुभव किया है। इसलिए, ईसाई पहली मौत, यानी शैतान और जानवर के हाथों शारीरिक मौत और नुकसान झेलते हैं, लेकिन वे दूसरी मौत का अनुभव नहीं करेंगे, जिसे आग की झील में फेंक दिया जा रहा है। वे ऐसा नहीं करेंगे इसका कारण यह है कि वे पहले पुनरुत्थान में भाग लेंगे; अर्थात्, वे पुनर्जीवित और न्यायसंगत होंगे और मसीह के साथ शासन करेंगे।

वे पहले पुनरुत्थान का अनुभव करेंगे। लेकिन एक दूसरा पुनरुत्थान है, लेकिन वह पुनरुत्थान मृतकों का होगा, और इसके परिणामस्वरूप दूसरी मृत्यु होगी। तो, उम्मीद है, मैंने आपको इसे थोड़ा समझने में मदद की है: कि संत पहली मृत्यु, शारीरिक मृत्यु का अनुभव करते हैं, लेकिन वे पहले पुनरुत्थान का अनुभव करेंगे, उन्हें पुनर्जीवित करेंगे, उन्हें सही ठहराएंगे, और मसीह के साथ शासन करेंगे।

मुझे ऐसा लगता है कि दूसरा पुनरुत्थान और दूसरी मृत्यु अविश्वासियों के लिए, उन लोगों के लिए आरक्षित है जो ईश्वर और उसके लोगों का विरोध करते हैं। लेकिन दोहराने के लिए, छंद चार से छह में क्या होता है, मैं इस बात पर जोर देना चाहता हूँ कि इसका मुख्य विषय मुख्य रूप से शैतान का फैसला है, लेकिन शैतान के फैसले के साथ-साथ, अब शैतान को दिए गए फैसले का मतलब यह दिखाना भी है संतों के प्रति उसका व्यवहार गलत और अन्यायपूर्ण था, कि उनके प्रति उसके आरोप गलत थे। इसका मतलब यह भी है कि भगवान को अपने लोगों को न्याय दिलाना होगा।

और इसलिए हम इसे श्लोक चार से छः में घटित होता हुआ पाते हैं, जहां उनका पालन-पोषण होता है, और वे पुनर्जीवित होते हैं, और वे मसीह के साथ एक हजार वर्ष तक शासन करते हैं।

एक हजार वर्ष केवल एक लंबी अवधि का प्रतीक नहीं है, बल्कि एक हजार वर्ष, मेरी राय में, उनकी पुष्टि, उनके पुरस्कार और उनकी जीत का प्रतीक है। उनका पालन-पोषण हुआ है, और अब वे शैतान द्वारा उनके साथ किए गए व्यवहार के विपरीत शासन करते हैं।

तो, उम्मीद है कि आप देख सकते हैं कि अध्याय 20 के संदर्भ में, शैतान के फैसले के संदर्भ में, हमें सहस्राब्दी को समझने के लिए क्या चाहिए। यह शैतान के निर्णय का लगभग एक आवश्यक हिस्सा है ताकि उन लोगों को भी सही ठहराया जा सके जिन्हें उसने नुकसान पहुँचाया है। और इसलिए, हालाँकि, हम इसे समझते हैं, हजार साल को मुख्य रूप से वह भूमिका निभानी होगी।

और अन्य सभी प्रश्न जो हम पूछते हैं कि वहां कौन होगा और ऐसे लोग कैसे हो सकते हैं जो मिलेनियम और वगैरह, वगैरह को आबाद करेंगे, वे सभी प्रश्न शायद अनावश्यक हैं क्योंकि जॉन की खुद के लिए एक बहुत ही विशिष्ट भूमिका है अध्याय 20 में सहस्राब्दी। दूसरी बात जो हमने नोट की वह यह है कि रहस्योद्घाटन का मुख्य लक्ष्य सहस्राब्दी नहीं है, बल्कि अध्याय 20 केवल समापन की तैयारी है, भव्य समापन और पुस्तक के चरमोत्कर्ष और पुस्तक का फोकस और पुस्तक का मुख्य लक्ष्य, जो अध्याय 21 और 22 है जिस तक हम एक क्षण में पहुंचेंगे। तो, प्रकाशितवाक्य अध्याय 20 में दो अंतिम खंड हैं।

पहला 7 से 10 में है, हम शैतान के अंतिम न्याय के बारे में पढ़ते हैं, जहां अब उसे वास्तव में रसातल से बाहर निकाल दिया जाता है, इस बिंदु पर, उसे रसातल से बाहर निकाल दिया जाता है ताकि वह एक सेना इकट्ठा करने में सक्षम हो सके और सेना इकट्ठा करने के लिए राष्ट्रों को एक बार फिर धोखा देना; यहाँ उन्होंने संतों के डेरे को घेर लिया। यहाँ संतों का शिविर संभवतः समग्र रूप से भगवान के लोगों का प्रतीक मात्र है। यहाँ विचार एक बार फिर यह है कि शैतान और पूरी दुनिया को अब ईश्वर के विरोध और उसके लोगों के विरोध और ईश्वर के लोगों के लिए खतरे के रूप में देखा जाता है।

लेकिन यह युद्ध उसी तरह समाप्त होता है जैसे अध्याय 19 में हुआ था, और वह यह है कि शैतान बस हार गया है और वास्तव में कोई लड़ाई नहीं हुई है। हमें कोई झड़प और दोनों तरफ के लोग, दोनों तरफ के लोग हताहत नहीं दिख रहे हैं। लेकिन इस मामले में, आग बस स्वर्ग से निकलती है और शैतान और उसके सभी दुश्मनों को भस्म कर देती है ताकि वास्तव में कोई लड़ाई न हो।

मैंने आपको पहले ही सुझाव दिया है कि मुझे लगता है कि श्लोक 7 से 10 में लड़ाई अध्याय 19 और श्लोक 17 से 21 के समान है और अध्याय 17 के समान है, जहां शैतान और 10 राज्य मेमने और के खिलाफ युद्ध छेड़ते हैं। भूमि ने उन्हें हरा दिया और रहस्योद्घाटन अध्याय 16 में मुहर संख्या 6 में आर्मागैडन की लड़ाई भी हुई। सभी एक ही अंत समय की लड़ाई को देखने के अलग-अलग तरीके हैं। और मैंने आपको सुझाव दिया कि अंत समय की लड़ाई मुख्य रूप से निर्णय का प्रतीक है।

यह मुख्य रूप से एक निर्णय दृश्य है जो इतिहास के अंत में घटित होता है। ऐसा सोचने का एक अन्य कारण यह है कि मैंने पहले ही उल्लेख किया है कि यह सोचना कि 20:7 से 11 में यह लड़ाई वही है जो अध्याय 19 के अंत में है, इसके पीछे वही पुराना नियम पाठ है। अर्थात्, जॉन इस युद्ध

को चित्रित करने के लिए एक मॉडल के रूप में एक ही पाठ, ईजेकील 38 और 39 से चित्रण कर रहा है।

यहेजकेल 38 और 39 एक अंत-समय की लड़ाई को संदर्भित करते प्रतीत होते हैं, और अब हमने जॉन को अध्याय 19 में उस भाषा का उपयोग करते हुए देखा है, पक्षियों और जानवरों को इकट्ठा होने और लाशों को खाने के लिए तैयार होने के लिए बुलाने की भाषा लड़ाई का परिणाम. अब, हम जॉन को उसी भाषा का उपयोग करते हुए या उसी पाठ का उपयोग करते हुए पाते हैं। उदाहरण के लिए, यह तथ्य कि उन्हें नष्ट करने के लिए आग स्वर्ग से नीचे आती है, यहेजकेल अध्याय 38 से सामने आती है।

तो, जॉन, यह अध्याय 19 का विरोधाभास नहीं है; वह अपने मुँह से निकलने वाली तलवार से उन्हें नष्ट कर देता है। अब वे आग से नष्ट हो गये हैं। क्या इसका मतलब यह है कि यह एक अलग लड़ाई है? नहीं, हमने देखा है कि जॉन विभिन्न घटनाओं को चित्रित करने के लिए विभिन्न छवियों का उपयोग कर सकता है।

अब, यहेजकेल और यहेजकेल की स्वर्ग से आग निकलने या आग से दुश्मनों के नष्ट होने की धारणा को चित्रित करते हुए, जॉन ने यहेजकेल के संकेत में दुश्मनों को आग से नष्ट होने का चित्रण किया है। गोग और मागोग के उल्लेख पर भी ध्यान दें। यहेजकेल का अध्याय 38 और पद 1, यह यहेजकेल अध्याय 38 और पद 1 है, हे मनुष्य के सन्तान, यहोवा का यह वचन मेरे पास पहुंचा, हे मनुष्य के पुत्र, यहेजकेल, अपना मुख मागोग देश के गोग की ओर कर।

तो जॉन का गोग और मागोग का संदर्भ एक संकेत है कि वह यहेजकेल अध्याय 38 की ओर इशारा कर रहा है। अब, गोग और मागोग कौन हैं? ईजेकील के साथ-साथ रहस्योद्घाटन के साथ सभी प्रकार के प्रयास हुए हैं, मैं उनमें नहीं जाना चाहता, लेकिन उन्हें आधुनिक राष्ट्रों जैसे कि रूस या किसी और के साथ पहचानने के सभी प्रकार के प्रयास हुए हैं। गोग और मागोग के साथ जिम्नास्टिक करने और उन्हें आधुनिक समय की घटना से जोड़कर, हम अक्सर पाते हैं कि गोग और मागोग को जॉन द्वारा आधुनिक राष्ट्रों के बारे में भविष्यवाणी करने जैसा माना जा रहा है।

इसके बजाय, मुझे लगता है कि श्लोक 8 में जॉन स्वयं हमें बताते हैं कि गोग और मागोग कौन हैं। शैतान को जेल से रिहा कर दिया जाएगा और वह पृथ्वी के चारों कोनों में राष्ट्रों को धोखा देने के लिए निकल जाएगा, जिनमें से चार पूरी पृथ्वी के प्रतीक हैं। मुझे लगता है कि जॉन यहेजकेल 38 में युद्ध के संकेत के रूप में गोग और मागोग का उपयोग कर रहा है। अब, जॉन गोग और मागोग को पूरी पृथ्वी के सभी राष्ट्रों के प्रतीक के रूप में देखता है।

तो यह पूरी पृथ्वी अब भगवान और उसके लोगों के अंतिम विरोध में है, अंतिम पृथ्वी जिसमें शैतान भगवान का विरोध करने के उनके प्रयास के पीछे पड़ा हुआ है। और फिर, वास्तव में, संख्या में, वे श्लोक 8 में समुद्र के किनारे की रेत की तरह हैं, एक और संकेत है कि यह सिर्फ दो राष्ट्र नहीं हो सकते हैं। यह गोग और मागोग का प्रतीक है, यहेजकेल 38 के संकेत में, पूरी पृथ्वी का प्रतीक है जिसे शैतान ने अब धोखा दिया है।



और अब वे युद्ध के लिये इकट्ठे हुए हैं। वे संतों को घेर लेते हैं, जैसा कि मैंने आपको सुझाव दिया था, संतों का शिविर संभवतः स्वयं भगवान के लोगों का प्रतीक है। हालाँकि यह पाठ जो बातें करता है, उनमें से एक यह नहीं बताती है कि अब संतों को डरना होगा क्योंकि वे दुश्मनों से घिरे हुए हैं और अब युद्ध हो रहा है।

संभवतः, यह संतों की पूर्ण सुरक्षा का अधिक प्रतीक है। यह लगभग वैसा ही है जैसे इसका कार्य यह दिखाना है कि अध्याय 20, श्लोक 4 और 6 में दिए गए फैसले को कोई भी पलट नहीं सकता। ऐसी कोई धमकी नहीं है, कोई रास्ता नहीं है कि उनके फैसले को पलटा जा सके।

और यह शैतान के प्रयास से संकेत मिलता है, सभी राष्ट्रों को भगवान के लोगों के खिलाफ लाने का उसका असफल प्रयास, और उन्हें उसी भाग्य का सामना करना पड़ता है जैसा हमने अध्याय 19 में देखा था। इस लड़ाई के बारे में कहने के लिए दूसरी बात भी है, भले ही केवल शैतान ही है वर्तमान या दोनों जानवर अध्याय 19 में एक बार फिर मौजूद थे, यह अलग-अलग लड़ाई का संकेत नहीं देता है। मुझे लगता है कि यह एक साहित्यिक तकनीक है जिसे जॉन, जैसा कि हम पहले ही देख चुके हैं, अपवित्र त्रिमूर्ति, शैतान और दो जानवरों को विपरीत क्रम में हटा रहा है जिसमें उन्हें अध्याय 12 और 13 में पेश किया गया था।

तो, मुझे लगता है कि यह सिर्फ एक साहित्यिक उपकरण है। फिर, इसे सख्त कालानुक्रमिक क्रम में नहीं लिया जाना चाहिए। मुझे लगता है, ये वही लड़ाइयाँ हैं।

शैतान का विचार और अध्याय 19 में ध्यान दें, ये दो जानवर हैं जिन्होंने शैतान के यहाँ सेना इकट्ठी की थी। लेकिन अध्याय 16 में, यह जानवर और शैतान दोनों थे जिन्होंने सेनाओं को इकट्ठा किया था, उनमें से तीनों मेंढक निकले जिन्होंने आर्मागेडन में युद्ध के लिए सेनाओं को इकट्ठा किया। तो फिर, मुझे लगता है कि हम अंत समय की लड़ाई को देखने के अलग-अलग दृष्टिकोण या अलग-अलग तरीके ढूँढते हैं।

अध्याय 19 में, हमने जानवरों के संबंध में अंतिम समय की लड़ाई देखी। अब हम स्वयं शैतान के संबंध में भी वही अंतिम समय की लड़ाई देखते हैं। लेकिन हमने पहले ही यह भी नोट कर लिया है कि, अध्याय 19 की तरह, कोई लड़ाई नहीं हो रही है।

यहां कोई शाब्दिक लड़ाई नहीं है। और शायद इसलिए, क्योंकि 19 की तरह, यह मुख्य रूप से एक न्याय दृश्य है जहां अब शैतान का उसी तरह न्याय किया जाता है जैसे अध्याय 19 में जानवर और झूठे भविष्यवक्ताओं का किया गया था। वास्तव में, श्लोक 10 अध्याय 20 में इसे स्पष्ट करता है, और शैतान जो उन्हें धोखा देकर जलती गंधक की झील में फेंक दिया गया, जहां उस पशु और झूठे भविष्यवक्ता को भी डाल दिया गया था।

और वे दिन-रात युगानुयुग यातना सहते रहे। यह प्रकाशितवाक्य अध्याय 19 की ओर एक स्पष्ट संकेत है। इसलिए अध्याय 20 में शैतान के फैसले के संदर्भ में, जो अध्याय 20 का मुख्य बिंदु है, जैसा कि हमने कहा है, अब हम पाते हैं कि अपवित्र त्रिमूर्ति अंततः हो गई है और उनके साथ पृथ्वी भर की सब जातियों और राजाओंको भी दूर करके उनका न्याय किया गया।

अब, हमारे पास अभी भी अंतिम निर्णय का दृश्य बाकी है जिसे हम बस एक क्षण में देखेंगे। लेकिन एक और बात जिस पर मैं जोर देना चाहता हूँ, वह यह है कि ध्यान दें कि इस युद्ध दृश्य में, श्लोक 7 से शुरू होकर, आपको शैतान से इस तरह से परिचित कराया जाता है जो आपको एक और तीन से जोड़ता है। और हमने कहा, संख्या 1,000 के उल्लेख के अलावा, जो इन तीनों दृश्यों को जोड़ती है, आप वास्तव में चार से छह को हटा सकते हैं, और एक से तीन स्वाभाविक रूप से सात में प्रवाहित होंगे।

तो एक से तीन में, शैतान एक हजार वर्षों के लिए बंधा हुआ है। और तीन के अंत में इस तथ्य का उल्लेख है कि उसे मुक्त कर दिया जाएगा। और अब हम श्लोक सात में पाते हैं, हजार साल पूरे होने के बाद, शैतान को अब उसकी जेल से रिहा कर दिया गया है।

अब, यहां कहने के लिए कुछ महत्वपूर्ण बातें हैं। सबसे पहले, अगर हम इसे सख्त कालानुक्रमिक अनुक्रम में पढ़ने की कोशिश करते हैं, तो संतों को सही ठहराए जाने और फिर हजारों वर्षों के बाद देखने का कोई मतलब नहीं है। दूसरे शब्दों में, जब आप इसे पढ़ते हैं, तो ऐसा प्रतीत होता है कि हमें इसे एक अस्थायी तरीके से लेना है, यह एक हजार साल बाद की भाषा है।

तो ऐसा प्रतीत होता है कि संतों को पहले पुनर्जीवित किया जाता है, और उन्हें हजारों वर्षों तक सही ठहराया जाता है। फिर उसके बाद फैसला आता है। लेकिन एक बार फिर, मुझे यकीन नहीं है कि हम इसे कालानुक्रमिक उत्तराधिकार के रूप में शाब्दिक रूप से लेने के लिए बने हैं।

इसके बजाय, इस अस्थायी भाषा का कारण यह है कि शैतान को एक हजार साल तक रसातल में बांधा जाएगा और फिर रिहा कर दिया जाएगा, और वह भगवान के संतों के खिलाफ सैनिकों को इकट्ठा करने में सक्षम होगा। यह भाषा, जैसा कि हमने पहले ही नोट किया है, शैतान को रिहा करने के लिए उसे बांधने की यह भाषा, यशायाह अध्याय 24 जैसे पुराने नियम की पुस्तकों और 1 हनोक जैसे सर्वनाश ग्रंथों और नए नियम के ग्रंथों से आती है जो उस विषय को उठाते हैं, जैसे 2 पतरस 2 और यहूदा 6. तो फिर, यहाँ क्या हो रहा है? जब हम श्लोक तीन में पढ़ते हैं, उसके बाद उसे थोड़े समय के लिए मुक्त कर देना चाहिए। जो कोई भी इस पाठ को उस सर्वनाशी रूपांकन के प्रकाश में पढ़ता है वह समझ जाएगा कि शैतान को मुक्त कर दिया गया है ताकि वह निर्णय ले सके।

और इसलिए, अध्याय 20 के श्लोक सात में, जब यह कहा गया है, जब हजार वर्ष पूरे हो जाएंगे, तो शैतान को रिहा कर दिया जाएगा, कोई भी 1 हनोक और पुराने नियम के ग्रंथों के बारे में सोच रहा है, जेल में आत्माओं को बांधने की यह अवधारणा, और जब वे हैं जेल में, वे न्याय के दिन की प्रतीक्षा कर रहे हैं, वे इसे तब पढ़ेंगे जब शैतान को जेल में जाने के लिए रिहा किया जाएगा। लेकिन जॉन, अपनी कथा के भाग के रूप में, एक और विशेषता जोड़ता है। इससे पहले कि वह न्याय में जाए, जैसा कि वह श्लोक 10 में करता है, इसलिए शैतान न्याय की प्रतीक्षा में रसातल में बंधा हुआ है, जहां उसे आग की झील में फेंक दिया जाता है।

लेकिन ऐसा करने से पहले, शैतान राष्ट्रों को धोखा देने और एक अंतिम हमला करने में सक्षम है। लेकिन मुझे लगता है कि जॉन ने अंत समय की लड़ाई को फिर से दोहराया है, इसका कारण एक बार फिर यह प्रदर्शित करना है कि अध्याय 20:4 से 6 में भगवान के लोगों पर फैसला, दोषमुक्त होने और पुनर्जीवित होने और मसीह के साथ शासन करने का फैसला नहीं हो सकता है। पलट जाना। इसका कोई नुकसान नहीं हो सकता।

शैतान परमेश्वर के अंतिम फैसले के सामने शक्तिहीन है। इसके बजाय, शैतान अंतिम समय की लड़ाई में है, एक बार फिर से हार गया है, जैसे दो जानवर थे, वह हार गया है, और वह पुराने नियम और अन्य सर्वनाश ग्रंथों से इस अवधारणा का संकेत देते हुए और उसका पालन करते हुए अपने विनाश में चला जाता है। तो 7, श्लोक 10 के साथ, हम अंततः उस बिंदु पर पहुँचते हैं जहाँ अब सभी शैतान, दो जानवर और शैतान को हटा दिया गया है और उनका न्याय किया गया है, और पृथ्वी के सभी राजाओं और पूरी मानवता का न्याय किया गया है।

फिर जो कुछ बचा है वह अध्याय 20 और श्लोक 11 से 15 में एक अंतिम निर्णय है, और यह तथाकथित महान श्वेत सिंहासन न्याय दृश्य है। इसे कहने का दूसरा तरीका यह है कि यह दूसरा पुनरुत्थान भी है, पहला पुनरुत्थान संतों के संबंध में पद 4 से 6 में घटित होता है। यह अब दूसरा पुनरुत्थान है, और जो लोग पुनर्जीवित हो गए हैं वे दूसरी मृत्यु में जा रहे हैं।

अब, हम इसे कैसे समझें? मेरी राय में, श्लोक 11 से 15, जैसा कि हमने देखा है, यह दूसरा पुनरुत्थान है, उन मृतकों का पुनरुत्थान जिनका न्याय किया जाता है। मेरी राय में, यह अविश्वासी मृतकों के लिए एक निर्णय है। यह अविश्वासियों के लिए एक निर्णय है।

संतों का निर्णय श्लोक 4 से 6 में पहले ही हो चुका है। उनका निर्णय उनकी ओर से दिया गया है। उन्हें उठाया गया है और सही ठहराया गया है, और विशेष रूप से यदि सिर काटे गए संत भगवान के संपूर्ण लोगों का प्रतिनिधित्व करते हैं, तो सभी संतों को उठाया गया है और श्लोक 4 से 6 में सही ठहराया गया है। तो, अविश्वासियों के अलावा कौन बचा है, अविश्वासी मृत जो अब पुनर्जीवित हो गए हैं, और उनका न्याय श्लोक 11 से 15 में किया जाता है। इसलिए, मैं प्रकाशितवाक्य 15 को सभी लोगों के न्याय के रूप में नहीं देखता, कुछ को अनन्त जीवन के लिए और कुछ को अनन्त न्याय के लिए।

मुझे लगता है कि 11 से 15 तक केवल अविश्वासियों का निर्णय है, और अब उनका न्याय किया जाता है। संतों का न्याय किया गया है, और निर्णय यह है कि उन्हें सही ठहराया गया है, उन्हें सही दिखाया गया है, उनका उत्थान किया गया है, और वे मसीह के साथ शासन करते हैं। अब, अविश्वासी मृतकों का न्याय, उन्हें पुनर्जीवित किया जाता है, और वे जानवरों, दो जानवरों और स्वयं अजगर के साथ आग की झील में समा जाते हैं।

दूसरे शब्दों में, मुझे लगता है कि शायद श्लोक 11 से 15 अन्य घटनाओं के बाद कालानुक्रमिक रूप से घटित नहीं होते हैं। फिर, यह सिर्फ एक आगे का दृश्य या चित्रण का एक और तरीका हो सकता है, यहाँ मसीह के दूसरे आगमन पर क्या होता है। और हो सकता है कि अध्याय 19 और 20 में सब कुछ होने के बाद यह सुझाव न दिया जाए कि आखिरकार ऐसा होता है, लेकिन यह

ईश्वर के फैसले को दर्शाने का एक और तरीका है, अविश्वासी मृतकों का अब न्याय किया जाता है।

इसका मतलब यह है कि जब आप 20 के अंत तक पहुंचते हैं, तो कुछ भी नहीं बचता है। आपके पास दो जानवर हैं जिनका न्याय किया गया है और उन्हें आग की झील में फेंक दिया गया है। आपके पास शैतान अजगर है जिसका न्याय किया गया है और उसे आग की झील में फेंक दिया गया है।

आपके पास सभी अविश्वासी मृत लोग हैं जिनका न्याय किया गया है और उन्हें आग की झील में फेंक दिया गया है। आपने पृथ्वी के सभी राष्ट्रों और सभी राजाओं का न्याय किया और उन्हें नष्ट कर दिया, न्याय में दंडित किया, ताकि अध्याय 20 के अंत तक, कुछ भी न बचे। सारी बुराई दूर हो गई है।

दुष्ट शैतानी तिकड़ी को हटा दिया गया है। उनके सभी अनुयायी, वे सभी जो जानवर का अनुसरण करते थे और उसकी छवि की पूजा करते थे, वे सभी जिन्होंने भगवान की संप्रभुता को स्वीकार करने से इनकार कर दिया था, और वे सभी जिन्होंने भगवान के वफादार लोगों को नुकसान पहुंचाया था, अब निर्णय दृश्यों की एक श्रृंखला में हटा दिए गए हैं जो नहीं हैं आवश्यक रूप से कालानुक्रमिक रूप से पालन करें, लेकिन केवल यह चित्रित करें कि जब इतिहास के अंत में ईसा मसीह न्याय करने के लिए आते हैं तो क्या होता है, ताकि अब आप अध्याय 21 और 22 के लिए तैयार हों। अब, नई रचना आ सकती है।

अब, पीछे जाएं और अनुभाग के कुछ विवरणों को देखें, तो महान श्वेत सिंहासन संभवतः किसी अलग या अलग सिंहासन को इंगित करने के लिए नहीं है, बल्कि संभवतः महान श्वेत सिंहासन है, और ध्यान दें कि इसका वर्णन कैसे किया गया है, फिर मैंने एक देखा महान, महान श्वेत सिंहासन और वह जो उस पर बैठा था। ऐसा लगता है कि मुझे अध्याय 4 याद आ गया है, जो सिंहासन पर बैठा है। तो मैं मानता हूँ कि यह अध्याय 4 जैसा ही सिंहासन है। वास्तव में, अध्याय 4 में स्पष्ट निर्णय रूपांकन हैं, गड़गड़ाहट और बिजली जो सिंहासन और सिंहासन पर बैठे व्यक्ति के संबंध में गड़गड़ाहट करती है।

हमने इसे पूरी किताब में एक निर्णय के रूप में देखा है। तो अब, अध्याय 4 में देखा गया सिंहासन, भगवान सिंहासन पर बैठा है, वह अंतिम निर्णय लेना शुरू कर देता है। तो महान श्वेत सिंहासन, शायद अध्याय 4 में वही सिंहासन है। और अब हम सभी मृतकों को पाते हैं, और मैंने सुझाव दिया है कि ये शायद अविश्वासी हैं।

विश्वासियों का न्याय आयत 4 और 6 में हुआ। वे अब पुनर्जीवित हो गए हैं; अविश्वासी मुर्दे जिलाये जाते हैं, परन्तु उनका न्याय किया जाता है; वे दूसरी मृत्यु में चले जाते हैं। पुस्तकों का उल्लेख, पुस्तकें रहस्योद्घाटन में कार्य करती हैं, और आप इसे अन्य सर्वनाशी ग्रंथों में एक रूपक के रूप में देखते हैं, अक्सर रिकॉर्डिंग कार्यों के लिए यहां एक रूपक है, लेकिन संबंधित होने के लिए एक रूपक भी है और भगवान के लोग कौन हैं। यहां, कार्य निर्णय के आधार के रूप में कार्य करते हैं।

संभवतया, यहां किताबें एक बार फिर पुराने नियम के एक अन्य पाठ, डैनियल अध्याय 7 को प्रतिबिंबित करती हैं, जिसे हमने कई बार प्रकाशितवाक्य में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हुए देखा है, लेकिन डैनियल अध्याय 7 और श्लोक 10 में एक किताब का उल्लेख है। 7 आयत 10 में, आग की एक नदी बह रही थी, उसके सामने से निकल रही थी, और यह प्राचीन काल का वर्णन है, हजारों हजारों उसके सामने उपस्थित थे, दस हजार दस गुना दस हजार उसके सामने खड़े थे। दरबार बैठा और किताबें खोली गईं।

डैनियल 7 प्रकाशितवाक्य के अध्याय 20 के लिए एक उपयुक्त प्रकार का उपपाठ है क्योंकि हम जो सुझाव दे रहे हैं वह यह है कि प्रकाशितवाक्य डैनियल अध्याय 7 की तरह ही एक अदालत का दृश्य प्रतीत होता है। और इसलिए अब डैनियल अध्याय 7 में किताबें खोली गई हैं। बाद में, डैनियल के अध्याय 12 में, हम उस समय पढ़ते हैं कि माइकल, महान राजकुमार जो आपके लोगों की रक्षा करता है, उठेगा। संकट का ऐसा समय आएगा, जैसा राष्ट्रों के आरंभ से लेकर उस समय तक कभी नहीं हुआ। परन्तु उस समय तेरे लोग, अर्थात् जिन सभी के नाम पुस्तक में लिखे हुए पाए जाएंगे, वे छुड़ाए जाएंगे।

बहुत से लोग जो पृथ्वी की धूल में सोते हैं, जाग उठेंगे, कुछ अनन्त जीवन के लिये, और दूसरे लज्जा और अनन्त तिरस्कार के लिये। यहां मैं डैनियल अनुभाग को लेता हूं; जो हैं, उनमें से कुछ को शर्मिंदगी और चिरस्थायी अवमानना का सामना करना पड़ेगा। वही यहाँ दर्शाया गया है।

जो लोग पुनर्जीवित हो गए हैं उन्हें श्लोक चार से छह में चित्रित किया गया है। अब, उसका दूसरा भाग, किताबों में वे लोग हैं जिन्हें अब अवमानना और सजा के लिए उठाया जाना है, यही श्लोक 11 से 15 में चित्रित किया गया है। तो, किताबों में उनके काम शामिल हैं।

दूसरे शब्दों में, मुझे लगता है कि यह उन लोगों का संदर्भ है, जिनके कार्य मुख्य रूप से नंबर एक हैं, शायद जिन्होंने संतों को मार डाला है, लेकिन यह तथ्य भी है कि उन्होंने जानवर का पीछा किया है। उन्होंने रोमन साम्राज्य की मूर्तिपूजक, ईश्वरविहीन गतिविधि में भाग लिया। उन्होंने उस पशु का पीछा किया है, और उन्होंने परमेश्वर के लोगों को मार डाला है।

और अब उन्हें इसके लिए आंका जा रहा है। जीवन की पुस्तक यहाँ सिर्फ इसलिए है क्योंकि, ज़ोर देने के लिए, मुझे लगता है कि उनके नाम इसमें नहीं पाए गए थे। अध्याय तीन में, श्लोक पाँच में, जॉन ने स्मिर्ना में चर्च से वादा किया कि उनके नाम जीवन की पुस्तक से कभी नहीं मिटाये जायेंगे।

अब, जीवन की पुस्तक यहाँ प्रकट होती है, मुझे लगता है, यह प्रदर्शित करने के लिए कि इन लोगों के नाम जीवन की पुस्तक में नहीं पाए गए थे। तो, यहाँ सभी पुस्तकें केवल परमेश्वर के लोगों के न्याय का आधार बनती हैं। ध्यान दें, दिलचस्प बात यह है कि कविता 13 में सभी बुराइयों के पूर्ण उन्मूलन, सभी बुराइयों और पूरी सृष्टि के पूर्ण न्याय की इस धारणा को जोड़ने के लिए, समुद्र ने अपने अंदर के मृतकों को छोड़ दिया, और मृत्यु और अधोलोक ने मृतकों को छोड़ दिया। .

यह तो दिलचस्प है. मृत्यु अपनी मृत्यु को त्याग देती है। शायद यहाँ मृत्यु को एक ऐसी शक्ति के रूप में देखा जाता है जिसका लोगों पर अधिकार है।

और फिर मृत्यु और अधोलोक को आग की झील में फेंक दिया गया। तो यहाँ हम एक ऐसी धारणा देखते हैं जो आपको कहीं और मिलती है, यहाँ तक कि सर्वनाश साहित्य में भी, शायद समुद्र और पाताल लोक में भी मृतकों के स्थान के रूप में। और अब वे न्याय के संदर्भ में अपने मृतकों को त्याग देते हैं।

लेकिन इतना ही नहीं, इस दृश्य में, और जैसा कि मैंने कहा, निर्णय की अंतिमता और इस अंतिम निर्णय दृश्य में सभी बुराइयों को पूरी तरह से हटाने पर जोर देना दिलचस्प है। ध्यान दें कि श्लोक 11 कैसे शुरू होता है, फिर मैंने महान सफेद सिंहासन और उस पर बैठे व्यक्ति को देखा, प्रकाशितवाक्य का चौथा अध्याय, पृथ्वी और आकाश उसकी उपस्थिति से भाग गए या स्वर्ग और पृथ्वी उसकी उपस्थिति से भाग गए। और दूसरे शब्दों में, वे न्याय से भी भाग जाते हैं।

और यह कहता है कि उनके लिए कोई जगह नहीं मिली। सो स्वर्ग, वरन आकाश और पृथ्वी भी सिंहासन पर बैठे हुए के साम्हने से भाग जाते हैं। ऐसा क्यों है? धरती भी क्यों और आसमान भी क्यों? हम इस पर तब लौटेंगे जब हम अध्याय 21 पर पहुँचेंगे, जो एक नई रचना का परिचय देता है, और पूछेगा कि हम इसे कैसे समझें? क्या हम इसे अध्याय 21 में शून्य से एक बिल्कुल नई रचना में इस सृष्टि के पूर्ण विनाश और विनाश के रूप में समझेंगे? या हमें इसे किसी और तरीके से समझना चाहिए? हम इसके बारे में बाद में थोड़ी बात करेंगे।

लेकिन मुझे लगता है कि पृथ्वी और आकाश को हटाने का एक कारण यह याद रखना भी है कि प्रकाशितवाक्य में अब तक, पृथ्वी और आकाश पर जानवरों और स्वयं शैतान का शासन रहा है। शैतान संसार का शासक है। शैतान और जानवर ने पृथ्वी को उजाड़ दिया है।

उन्होंने इसे बहुत नुकसान पहुँचाया है। उन्होंने पृथ्वी पर शासन किया है और इसका शोषण किया है। तो अब, एक व्यापक निर्णय दृश्य में, जॉन कहते हैं कि पृथ्वी और आकाश भी हटा दिए गए हैं।

इसलिए, यह मुख्य रूप से एक भौगोलिक टिप्पणी नहीं है, हालाँकि इसमें संभवतः वह भी शामिल है। लेकिन वैचारिक रूप से इसका अर्थ पृथ्वी को शैतान के शासन के क्षेत्र के रूप में प्रस्तुत करना है। पृथ्वी को शैतान और जानवर द्वारा तबाह और नष्ट कर दिया गया है और नुकसान पहुँचाया गया है।

पृथ्वी वह स्थान है जहाँ परमेश्वर के लोगों को नुकसान पहुँचाया गया था। जिस पृथ्वी पर रोम और ईश्वरविहीन साम्राज्यों का शासन था, वह पृथ्वी अब हटा दी गई है और नष्ट कर दी गई है। तो मुझे लगता है कि यह उतना भौगोलिक बयान नहीं है जितना कि यह एक धार्मिक और वैचारिक बयान है।

यहां तक कि अब समुद्र और पृथ्वी और आकाश को भी वर्तमान दुनिया की इस समग्र तस्वीर के कारण न्याय के अधीन देखा जाता है, जहां जानवर और शैतान ने शासन किया है और अपना

नुकसान किया है। अन्यत्र, उन्हें पृथ्वी के विध्वंसक के रूप में वर्णित किया गया है। इस खंड में एक अन्य टिप्पणी आग की झील का संदर्भ है।

जैसा कि आप शायद अब समझ गए हैं, और आप यह अनुमान लगाने में सक्षम हो सकते हैं कि जिस तरह से मैं इसे संभालने जा रहा हूँ, क्या आग की झील का भी शाब्दिक अर्थ नहीं लिया जाना चाहिए। यह ऐसा है मानो हम किसी शाब्दिक कड़ाही के संदर्भ में सोच रहे हों, आग की लपटों का एक विशाल कड़ाही जिसमें से लोग और जानवर और अजगर और लोग सचमुच फेंक दिए जाते हैं। इससे अधिक कुछ नहीं कि ड्रेगन एक शाब्दिक ड्रेगन है, जो स्वयं शैतान के विपरीत है।

तो, आग की झील किसी शाब्दिक झील या आग उगलने वाली कड़ाही का संदर्भ नहीं है, जिसमें लोगों को सचमुच फेंक दिया जाता है, बल्कि शायद यह केवल न्याय का प्रतीक है। यह ईश्वर की उपस्थिति से पूर्णतः विमुख होने का प्रतीक है। मानवता को ईश्वर की उपस्थिति से दूर करने और मूल रूप से उन्हें ईश्वर की उपस्थिति से अलग होकर शैतान और जानवरों के नियंत्रण में अनंत काल तक जीवन जीने की अनुमति देने का प्रतीक।

लेकिन जॉन इस बारे में ज्यादा नहीं बताते कि यह कहां है और कैसा है। फिर, मुख्य बात यह है कि भगवान के लोगों की पुष्टि का अर्थ है उन लोगों का न्याय करना जिन्होंने उन्हें नुकसान पहुंचाया है और पूरी मानवता को भगवान की उपस्थिति से पूरी तरह अलग करना है। जैसा कि हम अध्याय 21 और 22 में देखेंगे, ईश्वर के लोगों को मिलने वाला इनाम ईश्वर की उपस्थिति में जीवन है।

तो मैं मानता हूँ कि आग की झील नए यरूशलेम के बिल्कुल विपरीत है, प्रकाशितवाक्य अध्याय 21 में नई रचना। लेकिन मैं इससे भी अधिक कहना चाहता हूँ, सिवाय इसके कि यह उस फैसले का प्रतीक है जिसके परिणामस्वरूप भगवान की उपस्थिति से शाश्वत अलगाव होता है। तो, अध्याय 20 एक व्यापक न्याय दृश्य में सभी बुराइयों को दूर करने के साथ समाप्त होता है।

हालाँकि हमें संभवतः अध्याय 19, श्लोक 11 से 21 तक, अध्याय 20 के अंत तक शामिल करना चाहिए। एक व्यापक न्याय दृश्य में, सभी बुराई को हटा दिया गया है और न्याय किया गया है। जैसा कि मैंने पहले ही उल्लेख किया है, दो जानवरों को हटा दिया गया है और उनका न्याय किया गया है।

पृथ्वी के राजाओं को हटा दिया गया है और उनका न्याय किया गया है। पृथ्वी के सभी राष्ट्रों को हटा दिया गया है और उनका न्याय किया गया है। स्वयं शैतान, अजगर, को हटा दिया गया है और उसका न्याय किया गया है।

सभी अविश्वासी मृतकों को अब पुनर्जीवित कर दिया गया है, हटा दिया गया है और उनका न्याय किया गया है। यहाँ तक कि सृष्टि का भी न्याय किया गया है। वर्तमान स्वर्ग और पृथ्वी, न केवल भौगोलिक दृष्टि से बल्कि शैतान के प्रभुत्व के स्थान के रूप में, वह स्थान जहाँ उसने नुकसान पहुंचाया है, वह स्थान जहाँ उसने और जानवर ने तोड़फोड़ की है, वह सब एक व्यापक न्याय दृश्य में हटा दिया गया है।

और उस दृश्य के भाग के रूप में, अध्याय 21 और 22 की आशा करते हुए, उस निर्णय दृश्य के भाग के रूप में, अविश्वासी मानवता और जानवर और शैतान के निर्णय को यह प्रदर्शित करने की भी आवश्यकता है कि जिस तरह से उन्होंने भगवान के लोगों के साथ व्यवहार किया और उन्हें नुकसान पहुँचाया वह गलत था। और इसलिए फैसले के एक हिस्से का अर्थ है भगवान के लोगों का प्रतिशोध, जो हजार साल के शासन का प्रतीक है, उन्हें जीवन में लाया जाता है और पुनर्जीवित किया जाता है और एक हजार साल तक शासन किया जाता है, जो उनके प्रतिशोध का प्रतीक है। लेकिन वह भी केवल अध्याय 21 और 22 का अनुमान लगाता है, जहां हम देखेंगे कि संत हमेशा-हमेशा के लिए शासन करेंगे।

तो सब कुछ, सभी बुराई, हर बुरी चीज़, हर बुरी जगह, हर बुरा व्यक्ति, अब व्यापक दृश्य में हटा दिया गया है, निर्णय का एक व्यापक कार्य, अब एक नए रचनात्मक कार्य का मार्ग प्रशस्त कर रहा है, जो नए का आगमन है प्रकाशितवाक्य 21 में सृजन। तो अब जो कुछ बचा है, 20 के बाद जो कुछ बचा है, वह उन संतों के लिए है जिन्हें अध्याय 20:4 से छह में सही ठहराया गया है, जो कुछ बचा है वह संतों के लिए है ताकि वे अपनी शाश्वत विरासत में प्रवेश कर सकें। और ठीक यही हम अध्याय 21 और 22 से शुरू करते हुए पाते हैं।

तो फिर अध्याय 21 और 22 की ओर बढ़ते हुए, जैसा कि मैंने पहले ही कहा है, यह न केवल अंतिम दूरदर्शी अनुक्रम श्रृंखला है, रहस्योद्घाटन का दूरदर्शी खंड है, यह पूरी किताब का चरमोत्कर्ष है। कोई यह भी तर्क दे सकता है कि यह चरमोत्कर्ष है, जैसा कि हम तब देखेंगे जब हम इस पर काम करेंगे। कोई यह भी तर्क दे सकता है कि यह संपूर्ण बाइबिल का चरमोत्कर्ष है, जिसकी शुरुआत उत्पत्ति अध्याय 1 और उत्पत्ति अध्याय 2 से होती है, जहां मानवता को ईश्वर की उपस्थिति में रहते हुए पृथ्वी पर रहने के लिए बनाया गया है, जिसे उत्पत्ति अध्याय 3 में पाप के कारण विफल और बर्बाद कर दिया गया था। बाइबल के शेष भाग को एक स्तर पर उसे पुनर्स्थापित करने के प्रयास के रूप में देखा जा सकता है।

ईश्वर अपनी रचना को पुनः कैसे प्राप्त करेगा और अपने लोगों को स्वयं के साथ संबंध में कैसे पुनर्स्थापित करेगा? और वह अपने लोगों को ऐसी स्थिति में कैसे पुनर्स्थापित करेगा जहां वे अब पृथ्वी पर शासन करेंगे, जहां वे पृथ्वी पर रहेंगे और भगवान उनकी उपस्थिति में निवास करेंगे? बाइबल का शेष भाग एक अर्थ में यह है कि ईश्वर यीशु मसीह के माध्यम से ऐसा कैसे करता है। और अब हम ईश्वर की कहानी का चरमोत्कर्ष पाते हैं, एक मुक्तिदायी-ऐतिहासिक कहानी, जो अब मानवता के साथ अपनी अंतिम परिणति तक पहुँच रही है, जैसा कि हमने उत्पत्ति 1 और 2 में देखा था। अब ईश्वर एक नई रचना में पृथ्वी पर अपने लोगों के साथ रहते हैं। हम इसे थोड़ा और खोलेंगे, लेकिन महत्वपूर्ण बात यह है कि प्रकाशितवाक्य 21 निश्चित रूप से प्रकाशितवाक्य की पुस्तक का चरमोत्कर्ष है और इसे संपूर्ण बाइबल के चरमोत्कर्ष के रूप में समझा जा सकता है।

यह निश्चित रूप से, निर्णय के उन दृष्टिकोणों के बिल्कुल विपरीत भी है, जिन्हें हमने देखा है, विशेष रूप से निर्णय के संदर्भ में अध्याय 17 से 20 में। अब, इसके बिल्कुल विपरीत, एक नई रचना पर परमेश्वर के लोगों के लिए मुक्ति और इनाम की यह दृष्टि निश्चित रूप से साहसिक राहत के रूप में सामने आती है। अब, एक नई रचना के रूप में अपने लोगों के लिए परमेश्वर का उद्धार आ गया है।



इस पाठ पर सामान्यतः कुछ अन्य टिप्पणियाँ भी हैं। अध्याय 21 और श्लोक 1 से 8, हमने कहा, वास्तव में एक पूरे खंड से संबंधित हैं, जिसमें अध्याय 19 और 20 शामिल हैं। हमने कहा कि प्राथमिक विरोधाभास जिसमें स्पष्ट संरचनात्मक विशेषताएं हैं, जैसे कि एक देवदूत जिसने सात बैलों को पकड़ रखा था और जॉन को वेश्या के पास ले जा रहा था बेबीलोन और फिर जॉन के स्वर्गदूत की पूजा करने के लिए झुकने और स्वर्गदूत के यह कहने के साथ समाप्त हुआ कि ऐसा मत करो।

आप पाते हैं कि वे दो पुस्तकें अब दुल्हन, नए यरूशलेम के दर्शन की भी प्रस्तावना करती हैं, जो 21:9 से शुरू होकर 22:6 और उसके बाद के कुछ छंदों तक जाती हैं। तो इसका मतलब है कि अध्याय 19 से लेकर 21:8 तक अधिकांश भाग बेबीलोन, वेश्या बेबीलोन के विनाश और दुल्हन के नए यरूशलेम के आगमन के बीच एक संक्रमण खंड की तरह है। बीच में, आपको निर्णय दृश्यों की एक श्रृंखला मिलती है, जहां पूरी मानवता और जानवर और ड्रैगन से निपटा जाता है, और फिर एक व्यापक निर्णय में सब कुछ हटा दिया जाता है। अब, अध्याय 21, श्लोक 1 से 8, उसी से संबंधित है, लेकिन अब यह 21:9 में दुल्हन के नए यरूशलेम के आगमन के लिए एक सेटिंग, एक परिचय प्रदान करता है। और यह जो सेटिंग प्रदान करता है वह एक नई रचना है, एक बिल्कुल नई व्यवस्था का उद्भव है।

और इसलिए अब भगवान के फैसले का पालन करते हुए और 21 छंद 1 से 8 में नई रचना का पालन करते हुए, अब दुल्हन नया यरूशलेम वेश्या या वेश्या बेबीलोन के विपरीत, अब दुल्हन नया यरूशलेम पेश किया जाएगा और अब उभर सकता है और शादी संपन्न हो सकती है जिसे हम अध्याय 21 और श्लोक 9 में देखेंगे।

इसे देखने का एक और तरीका यह भी है कि अध्याय 4 और 5 अंततः अध्याय 21 और 22 में वास्तविकता बन गए हैं। हमने कहा, अध्याय 4 और 5 हमें एक ऐसे दृश्य से परिचित कराते हैं जहां पूरा स्वर्ग भगवान की संप्रभुता को स्वीकार करता है, जो उस पर बैठा है। सिंहासन, और प्रकाशितवाक्य की बाकी किताब को इस रूप में देखा जा सकता है कि स्वर्ग में भगवान की इच्छा कैसे पूरी होती है, भगवान की संप्रभुता को स्वर्ग में कैसे स्वीकार किया जाता है, वह अंततः उस पृथ्वी पर कैसे कार्यान्वित होती है जो इसका परीक्षण कर सकती है। अब हम देखते हैं कि अध्याय 4 और 5 का दृश्य अब नई सृष्टि के रूप में पृथ्वी पर वास्तविकता बन गया है।

इसे देखने का दूसरा तरीका यह है कि स्वर्ग और पृथ्वी अब अध्याय 21 और 22 में विलीन हो जाते हैं, जैसे स्वर्ग पृथ्वी पर उतरता है। अध्याय 4 और 5 में भगवान का सिंहासन और स्वर्ग में निवास अब प्रकाशितवाक्य 21 और 22 में नई सृष्टि के साथ व्यापक हैं। मैंने एक उपदेश शीर्षक सुना, या मैंने देखा, मैंने उपदेश नहीं सुना, मैंने कुछ समय पहले एक उपदेश शीर्षक देखा था प्रकाशितवाक्य 21 और 22 पर, और इसका शीर्षक था ईश्वर का नया घर, और मैं कुछ सेकंड के लिए हैरान हो गया, लेकिन जितना अधिक मैंने इसके बारे में सोचा, मुझे लगता है कि यह उतना ही सटीक है।

हम अक्सर अध्याय 21 को अपना नया घर, मुख्य लक्ष्य और स्वर्गीय नियति, भगवान के लोगों का मुख्य पुरस्कार मानते हैं, और यह निश्चित रूप से सच है; इसे इसी तरह प्रस्तुत किया गया है। लेकिन क्या आपने कभी रुककर सोचा कि प्रकाशितवाक्य 21 और 22 भी भगवान को एक नया घर मिलने के बारे में हैं? भगवान स्वर्ग से नीचे आते हैं और अब भगवान का सिंहासन और उनका निवास अब उनके लोगों के साथ एक नई पृथ्वी पर है।

दूसरे शब्दों में, अध्याय 21 और 22 में, भगवान कुछ ऐसा करता है जो उसने उत्पत्ति 1 और 2 के बाद से नहीं किया है, पृथ्वी पर अपने लोगों के साथ तुरंत और सीधे निवास करता है। कुछ ऐसा जो उसने 1 और 2 के बाद से नहीं किया है, कुछ ऐसा जो पाप के कारण बर्बाद और विफल और बाधित हो गया था, अब एक बार फिर से वास्तविकता बन गया है। इसलिए इसके अध्याय 21 और 22 केवल हमारे लिए एक नया घर पाने के बारे में नहीं हैं, यह भगवान के नए घर के बारे में भी है क्योंकि हम पाते हैं कि भगवान कुछ ऐसा कर रहे हैं जो उन्होंने उत्पत्ति के बाद से नहीं किया है, और वह है सीधे अपने लोगों के बीच में रहना नई सृष्टि, नई धरती पर।

तो अब अध्याय 19 और 20 में, हर चीज का न्याय किया जा चुका है, केवल एक चीज बची है कि भगवान के लोग अपनी विरासत में प्रवेश करें, अपनी विरासत का आनंद लें, जो कि एक नई रचना है, एक नई पृथ्वी पर एक नई रचना में जीवन जीना परमेश्वर और मेम्ना उनके बीच में रहते हैं। अगले भाग में, मैं अध्याय 21 और 22 में नई सृष्टि, नए यरूशलेम, अंतिम आदेश के चित्रण, अंत समय की वास्तविकता के चित्रण पर थोड़ा और विस्तार से गौर करूंगा और सभी के संदर्भ में इसके कार्य को देखूंगा। रहस्योद्घाटन के लेकिन अध्याय 21 और 22 में नई रचना के चित्रण के कुछ विस्तृत भागों को भी देखें।

यह रहस्योद्घाटन की पुस्तक पर अपने पाठ्यक्रम में डॉ. डेव मैथ्यूसन हैं। यह प्रकाशितवाक्य 20, सहस्राब्दी और महान श्वेत सिंहासन न्याय पर सत्र 27 है।